जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

॥ माह – सितंबर 2022 ॥ अंक – 26 ॥ केवल आंतरिक वितरण हेतु॥

अन्दर के पृष्ठों में...

सीएनआरपी सरिता
स्वस्थ समाज की रख रही नींव
(पृष्ठ – 02)

स्वरोजगार से
सपने हुए साकार
(पृष्ठ – 03)

राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक
विकास परियोजना से
विकसित होंगे ग्रामीण उद्योग
(पृष्ठ – 04)

राष्ट्रीय पोषण माह : समुदाय के व्यहार परिवर्तन की महत्वपूर्ण कड़ी

दुनिया में कुपोषण एक चिंता का विषय है। महिलाएं और बच्चे परिवार व समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं। उनके स्वास्थ्य व पोषण पर ध्यान केंद्रित करना बेहद महत्वपूर्ण है। इसी को ध्यान में रखते हुए भारत को कुपोषण मुक्त बनाने के उद्देश्य से माननीय प्रधान मंत्री ने वर्ष 2018 में पोषण अभियान की शुरुआत की। इस अभियान के तहत बच्चों, किशोरों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के पोषण संबंधी जरूरतों के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक बनाया जाता है। अभियान के तहत सामुदायिक जागरूकता सुनिश्चित करने और लोगों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए हर साल सितंबर माह देश स्तर पर "राष्ट्रीय पोषण माह" के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रीय पोषण माह का उद्देश्य कुपोषण मुक्त भारत बनाना है। पूरे माह के दौरान छोटे बच्चों और महिलाओं में पोषण के प्रति जागरूकता लाने हेतु समुदाय को संगठित कर उनकी भागीदारी को बढ़ावा दिया जाता है। पोषण माह के दौरान पोषण के महत्व और भूमिका की चर्चा लक्षित समुदाय के बीच की जाती है। उन्हें इस बात के प्रति भी जागरूक किया जाता है कि संतुलित आहार हमारे विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पोषण माह के दौरान देश भर में पोषण जागरूकता से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जाता है, जिसमें लक्षित समुदाय को विशेष रूप से जोड़ा जाता है।

एक समय था जब बिहार में कुपोषण बच्चों एवं महिलाओं के स्वस्थ्य जीवन एवं आजीविका के लिए बड़ी बाधा थी। पोषण अभियान के प्रेरण से लक्षित समुदायों द्वारा आहार विविधता को अपनाया गया, जिसका काफी सकारात्मक परिणाम हमारे सामने है। जीविका द्वारा समुदाय आधारित संगठनों के माध्यम से समुदाय में आजीविका संवर्धन के साथ स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता पर जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन के लिए लगातार कार्य किया जा रहा है। पोषण माह में इन प्रयासों को और ज्यादा बल मिलता है।

राष्ट्रीय पोषण मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति में पोषण अभियान पूरी तरह सहायक है। बिहार के सन्दर्भ में यह और अधिक प्रभावशाली साबित हुआ है। इसके द्वारा राज्य के 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे बड़ी संख्या में कुपोषण से तो मुक्त हुए ही हैं, वहीं अनीमिया जैसी बीमारियों से भी उनका बचाव हुआ है। कोविड–19 जैसी महामारी के कारण लोगों का पोषण स्तर प्रभावित हुआ और जीविकोपार्जन के साधन में भी काफी नुकसान पहुंचा है। इस वैश्विक महामारी से बचाव का महत्वपूर्ण उपाय टीकाकरण है। इस पोषण माह में टीकाकारण और कोरोना के प्रति उचित व्यवहार अपनाने के लिए भी लोगों को अभिप्रेरित किया जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए सितम्बर 2021 को पोषण और टीकाकरण माह के रूप में मनाया गया। जीविका दीदियों, कैडरों एवं कर्मियों ने इस दौरान विभिन्न गतिविधियों में अपनी सक्रिय भूमिका अदा की।

राज्य सरकार ने हमेशा से कुपोषण मुक्त बिहार के लिए सार्थक प्रयास किया है। इसमें पोषण माह की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। स्वस्थ समाज राज्य सरकार की उच्च प्राथमिकता में शामिल है। इस मुद्दे पर बिहार सरकार काफी गंभीरता एवं संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रही है। आज समेकित प्रयासों का परिणाम है कि आज बिहार की अधिकांश आबादी उचित पोषण को प्राप्त कर स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी अहम भूमिका अदा कर रही है।

बेहतर स्वास्थ्य से खुला समृद्धि का द्वार

नालन्दा जिले के हिलसा प्रखंड की रहने वाली ज्ञानती देवी पिछले 4 वर्षों से जीविका से जुड़ी हैं। सुविधाओं के अभाव में ज्ञानती देवी अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकी। माता–पिता ने समस्याओं के बीच उनकी शादी 2017 में हिलसा के एक किसान परिवार में कर दिया। ससुराल आने के पश्चात ज्ञानती देवी खेती के कार्यों में अपने ससुराल वालों का हाथ बंटाने लगीं। ससुराल में आस–पड़ोस की महिलाओं के सम्पर्क में आने के बाद ज्ञानती देवी को जीविका के बारे में जानकारी मिली और समूह से जुड़ गयी।

पहली संतान के जन्म के 2 साल बाद 2019 में ज्ञानती देवी पुनः गर्भवती हुई। ग्राम संगठन स्तर पर कार्यरत उप स्वास्थ्य समिति की ओर से ज्ञानती देवी का नाम गर्भवती महिलाओं की श्रेणी में रखा गया। इसके बाद परियोजना की ओर से चलाए जा रहे विशेष कार्यक्रम 'पारिवारिक आहार विविधता' के अंतर्गत उन्हें गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी सभी आवश्यक जानकारियों से अवगत करवाया गया। साथ ही गृह भ्रमण के दौरान पोषक आहारों एवं खाद्य समूहों की जानकारी दी गयी। इन जानकारियों से ज्ञानती आत्मविश्वास से भर गयीं। उन्हें यक़ीन हो गया कि जो छोटी–छोटी ग़लतियाँ उन्होंने अपनी पहली संतान के वक्त की थीं, उसे अब नहीं दुहराएँगी और आनेवाली संतान के बेहतर स्वास्थ्य के लिए सभी आवश्यक कार्य करेंगी। ज्ञानती देवी ने गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य एवं पोषण के सभी मापदंडों का पालन किया और एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया। नवजात शिशु के जन्म से लेकर पूरे 2 साल तक उसके खान–पान और स्वच्छता का ध्यान रखते हुए ज्ञानती देवी अपनी पहली संतान का भी बेहतर तरीके से ध्यान रख रही हैं।

आज ज्ञानती देवी अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक स्वास्थ्य को लेकर काफी सजग हैं और अपने आस–पास की महिलाओं को भी जागरूक कर रही हैं। ज्ञानती देवी मानती हैं कि अगर हर कोई अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दे तो बीमारियों और उसके इलाज पर होनेवाले ख़र्चों से बचा जा सकता है और एक खुशहाल जीवन जिया जा सकता है।

सीएनआरपी सरिता स्वस्थ समाज की रख रही नींव

मुजफ्फरपुर जिले के सकरा प्रखंड के सकरा फरीदपुर गांव की सरिता देवी जीविका में सीएनआरपी हैं। सीएनआरपी के तौर पर वह 12 ग्राम संगठनों में स्वास्थ्य एवं पोषण से संबंधित जागरूकता गतिविधि का संचालन कर रही हैं। सरिता देवी बताती हैं कि सीएनआरपी के रूप में चयनित होने के बाद उन्होंने जीविका मित्र के साथ मिलकर परिवारों की सूची बनायी। इस सूची में गर्भवती एवं धात्री माताओं को चिन्हित किया गया। इसके पश्चात प्रतिदिन उन परिवारों का गृह भ्रमण कर गर्भवती एवं धात्री माताओं को खाद्य विविधता, पूरक आहार, सभी प्रकार की जांच एवं धात्री माताओं के खान–पान तथा बच्चों के टीकाकरण की महत्वपूर्ण जानकारी देती हैं। इस प्रकिया से जहां लक्षित समूह पूरी तरह जागरूक हो रही हैं, वहीं स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता के प्रति संवेदनशील भी हुई हैं।

सरिता देवी बताती है कि–'आरोग्य दिवस के दिन वह गृह भ्रमण कर रही थी। इसी दौरान वह देव स्वयं सहायता समूह की दीदी विभा कुमारी जो गर्भावस्था के नौवें माह में थी, के घर गयी। काफी आवाज देने के बाद विभा देवी ने दरवाजा खोला। वह काफी घबरायी हुई थीं और रोते हुए बोली कि दीदी मेरे घर में कोई नहीं है। मेरी मदद कीजिए। उनकी हालत को देखते हुए सरिता दीदी ने स्थानीय आशा दीदी को फोन किया। लेकिन वह भी गांव में मौजूद नहीं थी। इस स्थिति को देखते हुए सरिता देवी ने फोन करके निजी वाहन को बुलाया और विभा दीदी को अस्पताल लेकर गयी।

अस्पताल जाने के दो घंटे के बाद विभा दीदी ने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। सरिता देवी ने बच्चे को जन्म के एक घंटे के अन्दर उनकी मां का पहला दूध भी पिलवाया। आज जच्चा–बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। विभा दीदी सरिता देवी द्वारा बताए गये सभी नियमों का पालन भी कर रही हैं।

सरिता देवी बताती हैं कि–'जीविका की वजह से आज मेरा परिवार काफी खुशहाल है। सीएनआरपी के रूप में अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता के विषयों पर सभी लोगों को जागरूक कर रही हैं। सकरा प्रखण्ड में सीएनआरपी के रूप में उनकी अलग पहचान है। आज सरिता देवी की पहल से विभा दीदी का परिवार काफी खुश है।

कृत्रिम फूलों के व्यवसाय से सज गयी मलही की जिंदगी

दरभंगा जिले के कुशेश्वर स्थान प्रखंड स्थित हिरनी गांव की मलही देवी अपने व्यवसाय द्वारा अपनी अलग पहचान बना चुकी हैं। जीविका के सहयोग से उन्होंने कृत्रिम फूलों का गुलदस्ता बनाने की कला को व्यवसाय में परिवर्तित कर रोजगार के नये आयाम स्थापित की हैं। मलही देवी अपने पति के साथ हरियाणा राज्य के करनाल शहर में रहती थीं। उनके पति कुंदन पासवान रिक्शा चलाकर बड़ी मुश्किल से जीवन–यापन कर पाते थे। कुछ वर्षों बाद जब कुंदन पासवान की तबीयत अचानक खराब हो गयी तो वह रिक्शा खींच पाने में असमर्थ हो गया। जिससे परदेश में रह पाना मुश्किल होने लगा था। इन परिस्थितियों के बीच मलही अपने परिवार के साथ वापस अपने गांव आ गयी। गांव में मजदूरी कर वह कठिनाई के साथ अपना जीवन यापन करने लगी।

आस–पड़ोस की दीदियों से मलही दीदी को जीविका समूह के बारे में जानकारी मिली। जिसके बाद मलही देवी लक्ष्मी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयी। समूह से जुड़ने के बाद मलही देवी का आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने हस्ताक्षर करना भी सीख लिया। समूह से 10,000 रूपये का ऋण लेकर उसने कृत्रिम फूलों का गुलदस्ता बनाने का कार्य प्रारंभ किया। मलही दीदी के कृत्रिम फूलों का व्यवसाय ठीक से चलने लगा। धीरे–धीरे दीदी के गुलदस्तों की मांग काफी बढ़ गयी लेकिन पूंजी के अभाव व कच्चे माल की कमी के कारण वह ग्राहकों की मांग को पूरा कर पाने में असमर्थ थीं। मलही ने जीविका से पुन: 40,000 का ऋण लेकर कच्चा माल खरीदा। कच्चे माल की प्राप्ति के बाद दीदी के व्यवसाय में चार चांद लग गया। स्थानीय बाज़ार के साथ दीदी को सरस मेला में भी अपने वस्तुओं के प्रदर्शन व बिक्री का मौका मिला। इस दौरान दीदी ने कई नई जानकारियों को हासिल किया तथा काफी मुनाफ़ा भी कमाया।

जीविका के सहयोग से मलही दीदी आर्थिक और सामाजिक रूप से सबल हो गयी हैं। मलही दीदी कहती हैं कि–'जीविका उनके अंधकारमय जीवन में नयी उम्मीदों की किरण लेकर आया। उन्होंने नहीं सोचा था कि वह जीवन में कभी आर्थिक तंगी से उबर पाएंगी लेकिन जीविका ने उनके सपनों को पूरा करने का कार्य किया। आज जीविका के कारण उनका जीवन काफी बेहतर हो गया है।

स्वरोजगार से सपने हुए साकार

पटना जिले के दानापुर प्रखंड स्थित रघुरामपुर पंचायत की रहने वाली गुड्डी देवी भगवती जीविका स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष हैं। उनके पति मदन राय मवेशी चारा की दुकान का संचालन करते हैं। दुकान से प्रति माह 5–7 हज़ार रूपये की आमदनी होती थी, जिससे उनका पूरा परिवार चलता था। पति की आमदनी से घर तो किसी प्रकार चल जाता था लेकिन अन्य खर्चों के लिए महाजनी कर्ज पर निर्भर रहना पड़ता था।

गुड्डी देवी बर्ष 2014 में जीविका समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद उनके जीवन में काफी बदलाव आया। बैठकों के दौरान गैर–कृषि गतिविधियों के बारे में दीदी को जानकारी मिली। जीविका ने मुझे सिखाया कि खुद के रोज़गार से अपने परिवार की आर्थिक मदद कर सकते हैं। मैं भी यही चाहती थी। मेरी भी इच्छा थी कि मेरा परिवार भी आगे बढ़े और मेरे बच्चे भी अच्छे से पढ़े–लिखें।

गुड्डी दीदी बताती हैं कि–'काफी सोचने–विचारने के बाद मैंने अपना व्यवसाय शुरू करने का मन बनाया। आस–पास में आटा चक्की नहीं होने के कारण घर पर आटा चक्की का मशीन बैठाया। मशीन एवं अन्य सामग्रियों के लिए गुड्डी दीदी ने अपने समूह से 1 लाख 10 हजार रूपए का ऋण लिया। इन पैसों से उसने आटा चक्की लगाया। गुड्डी देवी के दुकान पर ग्राहकों का आना–जाना लगा रहता है। गुड्डी देवी कहती हैं कि–'उन्हें प्रति माह 25 से 30 हज़ार रुपये की आमदनी हो जाती है।' मील की आमदनी से दीदी ने समूह का ऋण वापस कर दिया।

गुड्डी देवी बताती हैं कि–' मील चक्की की आमदनी से ही उन्होंने अपनी बेटी का विवाह भी किया। वह कहती है कि इस कारोबार से इतना ज्यादा मुनाफ़ा हुआ कि सारी चिंताएं दूर हो गई है। मेरे परिवार की खुशहाली में जीविका की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वह आगे कहती हैं कि समूह से मुझे जो ज्ञान और सहयोग मिला वो बेशकीमती है। इस उपलब्धि ने मेरे सारे सपनों को साकार कर दिया है।

राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक विकास परियोजना से विकसित होंगे ग्रामीण उद्योग

जीविका परियोजना अन्तर्गत समूह से जुड़े परिवारों को गैर कृषि आजीविका हेतु प्रोत्साहित करने एवं उनके द्वारा संचालित उद्यमों को चिह्नित कर विकसित करने की योजना है। इसी कड़ी में ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम को बढ़ावा देने, सहयोग प्रदान करने एवं प्रोत्साहित करने के लिए 'राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक विकास परियोजना' (एनआरईटीपी) क्रियान्वित की जा रही है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण स्तर पर ऐसे सूक्ष्म, लघु एवं कुटीर उद्योगों की पहचान करना है, जिन्हें परियोजना के माध्यम से वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान किया जा सके। इसके लिए बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में गैर कृषि आजीविका गतिविधियों के तहत उद्यम एवं उद्यमिता विकास के महत्व के बारे में समुदाय को जागरूक किया जा रहा है। साथ ही जीविका समूह से जुड़े परिवारों द्वारा संचालित लघु–कुटीर उद्योगों की पहचान की जा रही है। चिह्नित लघु एवं कुटीर उद्योगों को विकसित करने हेतु तकनीकी एवं वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। एनआरईटीपी परियोजना मुख्यतः तीन अवयव हैं– एनआरईटीपी इन्क्यूबेशन कार्यक्रम, एनआरईटीपी वन स्टॉप फैसिलिटी सेंटर (ओएसएफ) और क्लस्टर आधारित उद्योगों का विकास।

एनआरईटीपी इन्क्यूबेशन–इस कार्यक्रम के तहत बिहार में 150 श्रेष्ठ उद्योगों की पहचान की जा रही है, जिन्हें परियोजना की ओर से वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करते हुए विकसित बनाने की योजना है। भारतीय प्रबंधन संस्थान–कलकत्ता इनोवोशन पार्क के सहयोग से जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े प्रगतिशील ग्रामीण उद्योगों को चिह्नित कर उन्हें सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से एनआरईटीपी इन्क्यूबेशन प्रोग्राम शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत राज्य में 150 योग्य उद्यमों को प्रतियोगिता के माध्यम से चुनकर, वित्तीय एवं अन्य सहयोग प्रदान करते हुए विकसित उद्योग बनाने की योजना है। इसमें विनिर्माण/उत्पादन एवं सेवा क्षेत्र से जुड़े उद्योगों को शामिल किया गया है। श्रेष्ठ उद्यमों के चयन हेतु उद्यमिता विकास पखवाड़ा अन्तर्गत प्रत्येक प्रखंड से कम से कम 10 से 12 उद्यमियों की ओर से आवेदन तैयार कराया गया। परिणाम स्वरूप राज्य भर में कुल 26,000 से ज्यादा उद्यमियों के आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से पहले चरण के तहत 258 उद्यमियों की पहचान की गई। इन उद्यमियों को आईआईएम–कलकत्ता इनोवोशन पार्क की ओर से प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है। अंतिम दौर में इनमे से श्रेष्ठ 150 उद्यमों का चयन किया जाएगा।

सहयोग क्षेत्र – चयनित श्रेष्ठ 150 उद्यमियों का कौशल प्रशिक्षण, विकास योजना तैयार करना, गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली, नियामक अनुपालन, बाजार तक पहुंच एवं अनुबंध, नवाचार/नवीनीकरण और आधुनिक तकनीक अपनाने में सहयोग प्रदान किया जाएगा।

उद्योगों के प्रकार– इसमें विनिर्माण/उत्पादन एवं सेवा क्षेत्र से जुड़े उद्योगों को शामिल किया गया है। बड़े उद्योगों के लिए न्यूनतम वार्षिक कारोबार 20 लाख रुपये होना चाहिए। साथ ही ऐसे उद्योगों के लिए जीएसटी का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य रखा गया है। इसी तरह समूह उद्यम हेतु न्यूनतम वार्षिक कारोबार 20 लाख रुपये और व्यक्तिगत उद्यम के लिए 12 लाख रुपये न्यूनतम वार्षिक कारोबार की शर्त रखी गई है।

चैलेंज फंड – इस परियोजना के तहत चैलेंज फंड का प्रावधान किया गया है। यह सामाजिक रूप से सार्थक परियोजनाओं के जोखिम को कम करने और उन्हें आर्थिक रूप से लंबे समय के लिए प्रगतिशील रखने का एक अभिनव वित्त पोषण तंत्र है। इसके तहत उद्यमों को वित्तीय सहायता आवंटित करने हेतु पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया अपनाई गई है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर